समर्पण

downloadfreepsdfiles

अरूण कुमार त्रिपाठी

Copyright © 2018, Arun Kumar Tripathi
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur,
Chennai, Tamil Nadu 600016

ISBN-10: 1-5457-4160-3
ISBN-13: 978-1-5457-4160-3

Library of Congress Cataloging in Publication

मन की भँवरें

अभी तो अरूणोदय भी नहीं हुआ है,
यह कौन विद्युत घण्टी लगातार बजा रहा है।
खोला कपाट देखा सामने एक सुघड़ बाला,
यकीन न होता आंखों को क्या ये मधुबाला।

• • •

अरूण

आगमन कहो किस हेतु हुआ यहाँ,
तज चित्रकूट बाँदा बोलो कैसे आई।
मैं देख रहा हूँ चकित ठगा सा खड़ा हुआ,
तुम मधुबाला या हो उसकी प्रतिछाया।
कैसे हमारे घर का पता तुमको ज्ञात हुआ,
यदि कोई सेवा हो तो बिना संकोच आप कहें।
क्या संग भद्रजन कोई और आपके है,
जो भी कहना हो मधु हमसे साफ कहें।
यह प्रायश्चित सदन है अकेला रहता हूँ,
एकाकी नारी का प्रवेश वर्जित इसमें।
वैसे भी छिन्द्रांवेषी यह समाज है इतना,
क्या पता कब दोष लगा दे वह कहाँ किसमें।

20180030_Hindi Poems book.indd 1 9/11/18 11:40 AM

मधुबाला

हे अरूण, हृदय आराध्य, तुम्हें देखा जबसे,
मेरा अंतर हो उठा स्निग्ध पुलकित अपार।
सारा सेवापन चिर अभाव शून्यता मिटी,
जीवन में नूतन आशाओं का उठा ज्वार।
जनभद्र–अभद्र नहीं कोई संग साथ,
मैं निपट अकेली तुमसे मिलने आई हूँ।
प्रेरणा बनी रही तुम्हारी मैं आज तक,
अब तो प्रियतम तुम्हें बनाने आई हूँ।
मेरे स्पंदन में थिरकन में प्रतिकंपन में,
बस प्रेम तुम्हारा दिव्य कर रहा है प्रकाश।
मेरी श्वांसों के सरगम में प्रति धड़कन में,
कर रहा रूप तुम्हारा इस समय निवास।
कबसे मसोसती रही हृदय की पीड़ा को,
कुछ समझ न पाती कि कैसे अभिव्यक्त करूँ।
जिसके चिंतन में रहती हूँ मैं नित्य निरत
उससे अपने भावों को कैसे व्यक्त करूँ।
रोका लज्जा ने सदा सामने आने से,
संकोच पगों में लिपट बेड़िया बनना था।
मर्यादाओं ने कभी न होने दिया व्यक्त,
विद्रोहयुक्त स्वर अंतर में ही घुटता था।

20180030_Hindi Poems book.indd 2 9/11/18 11:40 AM

यदि तोड़ सको तोड़ो **कथित** आवरण सभी,
मेरी आँखों में देखो उनके भाव पढ़ो।
तोड़ो भ्रम यह विस्मय के बंधन सारे,
मुझको देखो मेरे तन के अनुभाव पढ़ो।
हठ करने को नहीं यह देह दिया उसने,
कामना कुसुम का इसमें बिखरा प्रकाश।
यदि सत्य अलौकिक तो लौकिक क्या नहीं श्रेष्ठ,
जीवन विराग है पर उसमें भरा हुआ राग।

● ● ●

अरूण

क्या बोलूँ मैं मित्र मिश्र की तुम परिणीता हो,
मैंने तुमको देखा लेकिन पावनता से।
लावण्य निहारता रमा और डूबा खोया,
पर कभी न देखा तुम्हें विषय कलुषता से।
देखा सौंदर्य अलौकिक ज्योति पुज,
जीवन मम करवा रहा कामना पंथ ऊपर।
तुम सुर सरिता की धवल धार गतिमान रहीं,
मैं बना रहा अवदान शिला तुमको निहार।
पंकिलता से ऊपर उठकर सरोज समान,

20180030_Hindi Poems book.indd 3 9/11/18 11:40 AM

तुमको निहार कर खिलता रहा हृदय मेरा।
आनन्द उर्मियां उठती थी जरूर लेकिन पवित्र,
तुमसे प्रतिभाशित रहा निरंतर पथ मेरा।
अंतरमुखता में अपनी मैं खोया खोया,
अनुभूति एक केवल तुमको मानता रहा।
बाहरी रूप पर दृष्टि कभी टिक सकी नहीं,
भावना एक केवल तुमको जानता रहा।
छू सका नहीं मेरे मानस को कभी मोह,
सामान्य से परे विशिष्ट तुमको मानता रहा।
दृष्टिगत दिव्य से परे सूक्ष्म में प्रविष्टि,
उस परम ज्योति की एक किरण मानता रहा।

• • •

मधुबाला

नारी जिसका लज्जा ही प्रिय आभूषण,
वह खड़ी लाज का त्याग निछावर तुम पर।
तुम पुरूष मोड़ते पौरूष से मुख अपना,
प्यारभरी निगाहों से भी देखो क्षण भर।
मैं करूँ रूदन या तोड़ लूँ सिर अपना,

20180030_Hindi Poems book.indd 4 9/11/18 11:40 AM

इस अपमानित मन का क्या उपचार करूँ।
हे अरूण बताओ तुम ही मुझको भारी श्रेष्ठ,
धरती में धंस जाऊँगा मृत्यु वरूँ।

● ● ●

अरूण

मधु संभालो मनभावों के तीव्र वेग,
संयम प्रभाव से उनकी चंचल गति बांधो।
मैं अज्ञ नहीं हूँ दशा तुम्हारी समझ लिया,
लेकिन इंद्रिय तरंग पर शम यदि बाँधो।
दो परिवारों के श्रेय प्रेय का ध्यान करो,
लौट जाओ मधु अभी तुम अपने घर को।
यह प्रणय निवेदन नहीं प्राण का बंधन है,
जाकर पूजो अपने प्रिय पति परमेश्वर को।

● ● ●

मधुबाला

धरती को छोड़ गगन की बातें न करो,
अपने निर्णय पर अरूण पुनः विचार करो।

20180030_Hindi Poems book.indd 5 9/11/18 11:40 AM

हो चुका हृदय जो पराधीन उसकी गति पर,
विवेक संयत कुछ तो सोच–विचार करो।
मत करो तिरस्कृत सहज प्रेम के बंधन को,
हे अरूण निवेदन है तुमसे पुनर्विचार करो।
नारी समर्पिता सुविनीता है, खड़ी हुई,
उसकी प्रणयाकांक्षा का कुछ उपचार करो।

• • •

अरूण

उपचार मात्र भ्रम का ही हो सकता है,
सत्य प्रेम का होता कुछ उपचार नहीं।
तुम प्रेम करो इससे मुझे कुछ इंकार नहीं,
पर देह प्रेम का अनर्थ मुझे स्वीकार नहीं।
तुम अनायास बांदा चलकर आई हो,
संध्या मिश्रा जी जब न तुम्हें घर पायेंगे।
खोजेंगे तुमको जब न मिलोगी उनको,
सोचो मधु वो कितना व्याकुल हो जायेगे।

• • •

20180030_Hindi Poems book.indd 6 9/11/18 11:40 AM

You've Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: https://store.prowesspub.com